



**A A ONLINE  
SOLUTION**



**Address**

Bihar, District- Nawada  
(Moglakhar)

**By Ashfaque Sir**



## GEOGRAPHY SUBJECTIVE GUESS QUESTION 2024

### लघु उत्तरीय प्रश्न

#### 1. संसाधन को परिभाषित कीजिए।

उत्तर-पर्यावरण में मौजूद वे सारी वस्तुएं जो किसी तरह मानव के जीवन में आने वाले आवश्यकताओं को पूरी करती है, संसाधन कहलाते हैं।

#### 2. प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण क्यों आवश्यक है?

उत्तर- पृथ्वी पर कुछ ऐसे प्राकृतिक संसाधन ऐसे हैं जिनकी मात्रा सीमित है। यदि वैसे संसाधनों का आवश्यकता से अधिक उपयोग करेंगे तो वे बहुत जल्द समाप्त हो जायेंगे और समाप्त होने के बाद इनका पुनः निर्माण नहीं हो पाएगा है। अतः संसाधनों का संरक्षण आवश्यक है।

#### 3. संसाधन संरक्षण का क्या महत्त्व है?

उत्तर- मानव प्राकृतिक संसाधनों का सृष्टिकर्ता नहीं है इसलिए मानव प्राकृतिक संसाधन को पूँजी समझकर उपयोग करे। इसका तात्पर्य यह है कि संसाधनों के उपयोग में कम-से-कम दुरुपयोग हो, उनकी कम-से-कम बर्बादी हो। मिट्टी जैसी संपदा की उर्वरता बनी रहे, उसे निम्नीकरण या कटाव से बचाया जाय। वन सम्पदा के अत्यधिक उपयोग में जाए जाने पर पुनः स्थापन पर बल देना उनका संरक्षण कहलाता है। अतः संरक्षण से तात्पर्य है संसाधनों का अधिकाधिक समय तक अधिक लोगों के लिए आवश्यकता की पूर्ति हेतु उपयोग हो।

संसार की आबादी का बड़ा भाग कृषि पर आश्रित है और कृषि कार्य के लिए मानव भूमि और मिट्टी का उपयोग करता है। इन संसाधनों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यदि इनमें कोई कमी है तो उसे पूरा कर उपयुक्त बनाया जाए। यदि वह बर्बाद हो रही है तो किस तरह उसका संरक्षण किया जाए। इसके लिए भूमि का उपयोग इस प्रकार होना चाहिए कि मिट्टी के प्रकार के अनुसार फसलें उगायी जाएँ ताकि भूमि की उत्पादकता बनी रहे और मिट्टी की गुणवत्ता नष्ट न हो।

#### 4. पवन अपरदन वाले क्षेत्र में कृषि की कौन - सी पद्धति उपयोगी मानी जाती है?

उत्तर- पवन अपरदन वाले क्षेत्रों में पट्टिका कृषि उपयोगी मानी जाती है। यह कृषि फसलों के बीच घास की पट्टियाँ विकसित कर की जाती है।

#### 5. जलोढ़ मृदा से क्या समझते हैं? इस मृदा में कौन - कौन - सी फसलें उगायी जाती है?

उत्तर- जलोढ़ मृदा नदियों द्वारा बहा कर लायी गई गाद से बनी है। समुद्री लहरों भी अपने तटों पर ऐसी ही मिट्टी की परते जमा कर देती हैं।

#### 6. भारत की नदियों के प्रदूषण के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- भारत की नदियों के प्रदूषण के कारण निम्नलिखित हैं -

- (i) नगरों के कूड़ा - करकट, मल आदि को नजदीकी नदियों, तालाबों में गिराया जाना
- (ii) कल - कारखानों के अपशिष्ट रासायनिक पदार्थों को नदी में गिराना।
- (iii) मृत जीव - जंतुओं को नदियों में फेंकना।
- (iv) बढ़ती आबादी और जीवन शैली।
- (v) तालाबों में कीटनाशक दवाएँ छिड़कना।

#### 7. जल संसाधन के क्या उपयोग हैं?

उत्तर- जल एक बहुमूल्य संसाधन है, जिसका उपयोग मानव प्राचीन समय से ही करता आ रहा है। प्राचीन काल से ही मानव द्वारा पेयजल, घरेलू कार्य, सिंचाई, मल - मूत्र विसर्जन आदि कार्यों में जल का उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में जल का सर्वाधिक उपयोग सिंचाई, विद्युत उत्पादन एवं उद्योगों में किया जा रहा है।

#### 8. भारत के किन भागों में नदी डेल्टा का विकास हुआ है?

उत्तर- नदियों के मुहाने पर उनके द्वारा लाई गई गाद के जमा होने से बना क्षेत्र जिसका आकार साधारण तौर पर त्रिकोणीय होता है, डेल्टा कहलाता है। भारत के पूर्वी भाग में गंगा - ब्रह्मपुत्र तथा महानदी, दक्षिण - पूर्वी भाग में गोदावरी तथा दक्षिण में कृष्णा एवं कावेरी नदियों द्वारा डेल्टा का विकास हुआ है।

#### 9. पर्यावरण के लिए वन क्यों महत्त्वपूर्ण हैं?

उत्तर- पर्यावरण के लिए वन सच्चा मानक है। एक तरफ वन भूमि जल का अवशोषण कर बाढ़ के खतरे को रोकती है तो दूसरी तरफ अच्छी वर्षा भी कराती है। यह वन्य प्राणियों को भी आश्रय प्रदान करती है तथा

मानव को भी अनेक आवश्यक वस्तुएँ देती हैं। जीव मंडल में जीवों और जलवायु को संतुलित स्थिति प्रदान कर संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में सर्वाधिक योगदान देता है।

### 10. चिपको आन्दोलन क्या है ?

उत्तर- उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल पर्वतीय जिले में सुन्दरलाल बहुगुणा के नेतृत्व में वृक्षों की कटाई रोकने के लिए 1972 में ' चिपको आन्दोलन ' शुरू हुआ। इस आन्दोलन में कटने वाले पेड़ से एक व्यक्ति चिपक जाता था और पेड़ काटने वालों से कहता था कि पहले मुझ पर कुल्हाड़ी चलाओ। इस प्रकार वे चिपको आन्दोलन सफल रहा।

### 11. वन विनाश के दो प्रमुख कारकों का उल्लेख करे ?

उत्तर- वन विनाश के कारकों के दो मुख्य करक निम्नलिखित है :-

### 12. खनिज को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- प्रकृति में स्वतः पाए जाने वाले ऐसे पदार्थ जिनकी एक निश्चित आंतरिक संरचना होती है, खनिज कहलाते हैं। ये चट्टानों में अयस्क के रूप में पाये जाते हैं। इसकी उत्पत्ति पृथ्वी के अंदर विभिन्न भू-वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा होती है। यह एक प्राकृतिक और अनवीकरणीय संसाधन है।

### 13. खनिजों के संरक्षण एवं प्रबन्धन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- खनिज अनवीकरणीय संसाधन है। अतः इनका संरक्षण आवश्यक है। निम्नांकित उपायों द्वारा खनिजों का संरक्षण और प्रबन्धन किया जा सकता है।

(i) खनिजों का विवेकपूर्ण उपयोग।

(ii) कच्चे माल के रूप में खनिजों के स्थान पर उनके सस्ते प्रतिस्थापनों का उपयोग।

(iii) स्क्रैप का पुनः उपयोग।

(iv) खनिज निक्षेप का पूर्ण संदोहन।

### 14. कोयले के विभिन्न प्रकारों के नाम लिखिए।

उत्तर- कोयला के चार प्रमुख प्रकार हैं- (i) एंथ्रासाइट, (ii) बिटुमिनस, (iii) लिग्नाइट एवं (iv) पीट।

### 15. परंपरागत और गैर-परंपरागत ऊर्जा स्रोतों में अंतर बताइए।

उत्तर- परंपरागत ऊर्जा के स्रोत समाप्त हो जाने वाले शक्ति के साधन हैं और अनवीकरणीय है। इसलिए इनका उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से किया जाना चाहिए। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस इसके उदाहरण हैं। गैर परंपरागत ऊर्जा के स्रोत नवीकरणीय है और आवश्यकता एवं क्षमता के अनुसार इनका उत्पादन बढ़ाया और उपयोग किया जा सकता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि इसके उदाहरण हैं।

### 16. सौर ऊर्जा का उत्पादन कैसे होता है?

उत्तर- सौर ऊर्जा प्राप्त करने के लिए सोलर प्लेट का निर्माण किया जाता है। इस प्लेट में सीज़ियम धातु के पतले-पतले तार लगाए जाते हैं। जब इन तारों पर सूर्य का प्रकाश पड़ता है तो फोटोवोल्टाइक प्रौद्योगिकी द्वारा धूप को सीधे विद्युत में परिवर्तन किया जाता है। इसे विद्युत सौर प्लेट में लगे तार द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तु से जोड़ दिया जाता है। इस प्रकार, सौर ऊर्जा की प्राप्ति होती है। भारत के पश्चिमी भाग गुजरात और राजस्थान में सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएँ हैं।

### 17. पेट्रोलियम से किन-किन वस्तुओं का निर्माण होता है?

उत्तर- पेट्रोलियम एक शक्ति संसाधन है, जिसका हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्त्व है। इसका मुख्य उपयोग यातायात के साधनों में ईंधन के रूप में होता है। इसके अलावा औद्योगिक मशीनों में स्नेहक के रूप में होता है। पेट्रोलियम का उपयोग संश्लेषित वस्त्र, उर्वरक, रसायन उद्योग, कीटनाशक दवा एवं कृत्रिम रबर बनाने में भी किया जाता है।

### 18. हरित क्रांति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर :- सन् 1960 के दशक में पंजाब, हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश में कृषि के क्षेत्र में एक क्रांति हुई थी जिसे हरित क्रांति कहते हैं। इसने भारत को कृषि के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। इसमें सर्वाधिक उपज गेहूँ की हुई थी। इस क्रांति के जनक डॉ० एम० एस० स्वामीनाथन थे। इसमें उत्तम बीजों एवं खाद का प्रयोग किया गया था।

### 19. फसल चक्रण, मृदा संरक्षण में किस प्रकार सहायक है?

उत्तर :- एक ही खेत में विभिन्न फसल ऋतुओं में भिन्न-भिन्न फसलों की बुआई करना फसल चक्रण कहलाता है। एक फसल ऋतु में बोई गई फसलों द्वारा मृदा से जिस प्रकार का पोषक तत्व अधिक मात्रा में ग्रहण किया जाता है, दूसरी फसल ऋतु में उसी भूमि पर ऐसी फसल बोई जाती है जो कि पहली फसल द्वारा ग्रहण किए गए पोषक तत्वों की आपूर्ति कर दे। उदाहरणस्वरूप, यदि खरीफ फसल ऋतु में किसी भूमि पर धान की बुआई की जाती है जो अधिक नेत्रजन अवशोषित करता है तो रबी फसल ऋतु में मसूर, मूंग एवं अन्य दलहनी फसलें लगाई जाती हैं जो वायुमंडल से नाइट्रोजन को ग्रहण कर मृदा में इसकी आपूर्ति कर देती हैं। इस तरह, फसल चक्रण मृदा में संरक्षण में सहायक हैं।

### 20. नकदी फसल और रोपण फसल में क्या अंतर है?

उत्तर :- नगदी फसल छोटे या बड़े आकार के भूखंड पर अधिक से अधिक मुद्रा की प्राप्ति के उद्देश्य से इस प्रकार के फसल उगाए जाते हैं। जैसे-तंबाकू, मसाला आदि। रोपण फसल — रोपण कृषि भी एक प्रकार की व्यापारिक कृषि ही है। इस कृषि में उद्योग की तरह ही मैनेजर एवं मजदूर की व्यवस्था होती है और मिल मालिक की तरह इसमें कृषक की स्थिति होती है। ऐसी कृषि बड़े-बड़े फार्मों में यंत्रों एवं अन्य आधुनिक तकनीक से की जाती है।

## 21. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को सोदाहरण वर्गीकृत कीजिए ।

उत्तर :- स्वामित्व के आधार पर उद्योगों के निम्नलिखित तीन वर्ग किये जाते हैं ।

**निजी उद्योग** - जब किसी उद्योग का स्वामित्व एवं नियंत्रण किसी निजी व्यक्ति के हाथों में होता है तब इस प्रकार के उद्योग को निजी उद्योग कहा जाता है ।

जैसे - टाटा उद्योग , गोदरेज उद्योग

( ii ) **सार्वजनिक उद्योग** - जब किसी उद्योग का संचालन एवं नियंत्रण सरकार अथवा इसके द्वारा नियुक्त व्यक्ति के हाथों में होता है तब उसे सार्वजनिक उद्योग कहा जाता है ,

जैसे- बोकारो लौह - इस्पात उद्योग , भारतीय आयुध कारखाना ।

( iii ) **संयुक्त उद्योग** - जब किसी उद्योग का संचालन एवं नियंत्रण सरकार एवं निजी व्यक्ति के संयुक्त प्रयास से किया जाता है तब ऐसे उद्योग को संयुक्त उद्योग कहा जाता है ,

जैसे - महाराष्ट्र के कई चीनी उद्योग , अमूला

## 22. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर :- **उदारीकरण** - उदारीकरण का अर्थ ऐसे नियंत्रण में ढील देना या उन्हें हटा लेना है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिले

**निजीकरण** - निजीकरण का अर्थ उस अर्थव्यवस्था से है जिसमें सरकारी हस्तक्षेप एवं नियंत्रण के जगह निजी क्षेत्र को महत्व प्रदान करना है ।

**वैश्वीकरण** - वैश्वीकरण का अर्थ देश की अर्थव्यवस्था को अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ना है ।

## 23. सार्वजनिक और निजी उद्योगों में अन्तर स्पष्ट करें ।

उत्तर :- सार्वजनिक उद्योग - जब किसी उद्योग का संचालन एवं नियंत्रण सरकार अथवा इसके द्वारा नियुक्त व्यक्ति के हाथों में होता है तब उसे सार्वजनिक उद्योग कहा जाता है ।

जैसे — बोकारो लोहा - इस्पात उद्योग , भारत हेवी इलेक्ट्रिक लिमिटेड

**निजी उद्योग** - जब किसी उद्योग का स्वामित्व एवं नियंत्रण किसी निजी व्यक्ति अथवा उसके द्वारा नियुक्त व्यक्ति के हाथों में होता है तब इस प्रकार के उद्योग को निजी उद्योग कहा जाता है ।

जैसे - टाटा उद्योग , गोदरेज उद्योग आदि ।

## 24. उपभोक्ता उद्योग किसे कहा जाता है?

उत्तर :- जिस उद्योग के उत्पादन का उपभोग सीधे उपभोक्ताओं द्वारा किया जाता है, उसे उपभोक्ता उद्योग कहा जाता है। जैसे- सीमेंट, पेपर, दंतमंजन, पंखा इत्यादि ।

## 25. वायु परिवहन की प्रमुख विशेषताएँ को लिखें ?

उत्तर :- वायु परिवहन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं -

- यह यातायात का सबसे तेजी से यात्रा करने वाला साधन है ।
- इसके लिए मार्ग का निर्माण और रख - रखाव नहीं करना पड़ता है ।
- अत्यधिक ऊँचाई पर उड़ने के कारण इसे प्राकृतिक बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ता है ।
- इससे पहाड़ों , मरुस्थलों , गहरे महासागरों और घने वनों को आसानी से पार कर लिया जाता है ।

## 26. भारत में सड़कों का प्रादेशिक वितरण का वर्णन करें ?

उत्तर :- भारत में सड़कों का प्रादेशिक वितरण अलग अलग है । सभी राज्यों में सड़कों का विकास एक जैसा नहीं हुआ है । समान रूप से विकास नहीं होने के कारण है - भू - आकृति , केन्द्र एवं राज्य सरकारों की उत्तर :- नाराजगी एवं राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी । महाराष्ट्र में 2.70 लाख कि० मी० लम्बी पक्की सड़कें हैं जबकि उत्तरप्रदेश 2.47 लाख कि० मी० , उड़ीसा में 2.36 लाख कि० मी० है ।

## 27. बिहार में वन विनाश / अभाव के दो प्रमुख कारकों को लिखें ।

उत्तर :- बिहार में वन विनाश के दो कारक निम्नलिखित हैं -

- बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए कृषि भूमि का विस्तार , मानव अधिवास क्षेत्र का विकास तथा ईंधन और फर्नीचर के लिए लकड़ी की आवश्यकता ।
- मानव का हस्तक्षेप तथा कुछ नदियों द्वारा तीव्र मार्ग परिवर्तन ।

## 28. सोन नदी घाटी परियोजना से उत्पादित जल विद्युत का वर्णन कीजिए ।

उत्तर :- सोन नदी पर डेहरी - ऑन - सोन के निकट एक बाँध बनाया गया है । इस बाँध से 10 कि० मी० ऊपर हटकर इन्द्रपुरी बराज बनाया गया है । इस परियोजना के तहत दो जल विद्युत उत्पादन केन्द्र पूरब में बारूण के पास तथा पश्चिम में डेहरी के पास विकसित किए गए हैं । इनकी उत्पादन क्षमता 3.3 मेगावाट एवं 6.6 मेगावाट है । सोन नदी और पटना मुख्य नहर के संगम पर अगनूर के निकट भी 100 किलोवाट विद्युत उत्पादन क्षमता का एक शक्ति केन्द्र स्थापित किया गया है ।

## 29. समोच्च रेखाओं द्वारा शंक्वाकार पहाड़ी का प्रदर्शन किस प्रकार किया जाता है ?

उत्तर :- समोच्च रेखा समूह जल तल से एक समान ऊँचाई वाले स्थान के बिंदुओं को मिलाकर मानचित्र पर खींची गई काल्पनिक रेखा है । समोच्च रेखा द्वारा शंक्वाकार पहाड़ी को दिखाने के लिए समोच्च रेखाओं को लगभग वृत्ताकार रूप में बनाया जाता है, जिसमें अंदर से बाहर की ओर मान क्रमशः घटता जाता है ।

## दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

### 1. बिहार में कृषि की निम्न उत्पादकता के दो कारण बताइए।

उत्तर :- बिहार में कृषि संबंधी तीन समस्याएँ निम्नलिखित हैं -

(1) सिंचाई की समस्या - बिहार की कृषि, मानसून पर निर्भर है। यहाँ न तो नहरों का पूरी तरह विकास हुआ है और न ही विद्युत संचालित नलकूप का।

(ii) खेतों का छोटा आकार - बिहार में सामाजिक कारणों से खेतों का आकार छोटा हो रहा है। परिवार में विभाजन होते ही खेतों का विभाजन हो जाता है। छोटे खेत को यंत्रों से जुटाई एवं सिंचाई काफी महँगी एवं कठिन होती है।

(iii) उन्नत किस्म के कृषि यंत्रों का अभाव - बिहार में ज्यादातर किसान सीमांत एवं लघु हैं पूँजी की कमी के कारण ये उन्नत किस्म के कृषि यंत्र खरीदने में असमर्थ हैं।

### 2. बिहार की खनिज-सम्पदा का संक्षिप्त विवरण दे।

उत्तर :- बिहार की खनिज सम्पदा इस प्रकार है -

**पाइराइट** - यह रोहतास के अमझौर, बनजारी एवं अन्य स्थानों में पाये जाते हैं।

**बॉक्साइट** - यह मुंगेर की खड़गपुर पहाड़ी और रोहतास के बंजारी से होती है

**अभ्रक** - यह गया, नवादा, जमुई और बांका में मिलता है।

**चूना पत्थर** - चूना पत्थर सीमेंट उद्योग का कच्चा माल है। चूना पत्थर की प्राप्ति कैमूर पठार, रोहतासगढ़, बंजारी तथा डुमरखंड से होता है।

**ग्रेफाइट** - बिहार में मुंगेर का सीमलताला ग्रेफाइट का उत्पादक क्षेत्र है।

### 3. बिहार में नदियों का परिवहन क्षेत्र में क्या योगदान है?

उत्तर :- बिहार एक भू-आवेशित राज्य होने के कारण इसका सम्पर्क समुद्री मार्ग से नहीं है। यहाँ जलमार्ग के लिए नदियों का उपयोग किया गया है। गंगा, घाघरा, कोसी, गंडक और सोन नदियाँ मुख्य रूप से जल परिवहन के लिए उपयोग में लायी जाती हैं। घाघरा नदी से खाद्यान्न, गण्डक से लकड़ी, फल, सब्जी, सोन से बालू और पुनपुन नदी से बाँस ढोया जाता है। वर्तमान समय में जल परिवहन के लिए स्टीमर बड़ी-बड़ी नावें कार्यरत हैं। गंगा नदी में हल्दिया इलाहाबाद राष्ट्रीय जल मार्ग का विकास किया गया है। हाल में ही महेन्द्रु घाट के पास एक राष्ट्रीय पोत संस्थान की स्थापना की गई है। बिहार में नदियों से संबंधित सिंचाई योजना के अंतर्गत नहरों के निर्माण में जल मार्ग के विकास की संभावनाएँ हैं। नहरों से परिवहन के लिए कई योजनाओं पर कार्य चल रहा है।

### 4. जैव - विविधता क्या है? यह मानव के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर - किसी विशेष क्षेत्र में उपस्थित एक सामुदायिक जातियों की संख्या एवं जातियों के अंतर्गत आनुवंशिक परिवर्तनशीलता की मात्रा उस क्षेत्र के समुदाय की जैव विविधता कहलाती है।

जैव विविधता मानव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह नई फसलों, औषधियों को प्राप्त करने का स्रोत है। बढ़ती हुई जनसंख्या के पेट भरने के लिए एवं स्वस्थ रहने के लिए इन फसलों एवं औषधियों का महत्त्व और भी अधिक है। इससे मानवीय विकास को गति प्रदान होती है। पर्यावरणीय परिवर्तन का सामना करने में जैव विविधता महत्वपूर्ण कार्य करता है। यह वर्तमान समय में सभी जातियों की आनुवंशिक विविधताओं को संरक्षित रखने में सहायक होता है। इस प्रकार मानव जीवन को स्वस्थ, संतुलित तथा विकासशील रखने में जैव विविधता का अक्षुण्ण बनाए रखना मानव के लिए महत्वपूर्ण है।

### 5. किस प्रकार मानवीय क्रियाएँ वनस्पति एवं जीव - जंतुओं के हास के लिए उत्तरदायी हैं?

उत्तर - वनस्पति, मानव को दिया गया प्रकृति का एक अमूल्य उपहार है। ये वनस्पतियाँ कई प्रकार से मनुष्य के जीवन की रक्षा करते हुए विकास को गतिशील बनाने में सहायक होती हैं। विकास के इस दौर में मानव प्रकृति के इस अमूल्य योगदान को भूलता जा रहा है। मानव ने विकास के नाम पर सड़कों, रेलमार्गों, शहरों का निर्माण करना शुरू किया। इसके लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की गयी। जिससे वनों का नाश होने लगा, वन्य प्राणियों का आश्रय स्थल ही उजड़ने लगा। कृषि से अत्यधिक उपज के लिए अत्यधिक सिंचाई, रासायनिक खाद का प्रयोग किया गया। इसके कारण एक ओर भूमि निम्नीकरण से वनों को नुकसान हुआ तो दूसरी ओर जलों के दुषित होने से जीव - जंतु के अस्तित्व पर भी खतरा मंडराने लगा। कल - कारखाने स्थापित करने के लिए वनों की कटाई की गयी। पुनः इन कल - कारखानों से निकलने वाले घुआँ और कचरों ने वायु और जल को दूषित किया, जिससे अम्लीय वर्षा के कारण वन और वन्य प्राणियों पर खराब प्रभाव पड़ा। वनों के हास ने प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ दिया, जिससे जलवायु परिवर्तन जैसी समस्या सामने आने लगी है।

(iv) अनादिकाल से ही मनुष्य का वन्यजीवों से सांस्कृतिक एवं धार्मिक लगाव रहा है। पीपल, बरगद, तुलसी, आँवला आदि की मनुष्य पूजा करता है। बाघ, चूहा, गरूड़, बैल आदि देवताओं के वाहन हैं।



## 6. धात्विक एवं अधात्विक खनिजों में क्या अन्तर है ?

उत्तर- (i) धात्विक खनिज - ऐसे खनिजों में धातु मौजूद रहते हैं। ये धातु किसी - न - किसी धातु के साथ मिले होते हैं। जैसे लौह अयस्क, ताँबा, निकेल आदि। लौह धातु की उपस्थिति के आधार पर धात्विक खनिज को भी दो उप-भाग में बाँटा जाता है।

(क) लौह युक्त धातु (ख) अलौह युक्त धातु लौह युक्त धातु में लोहा के अंश अधिक होते हैं, जैसे - लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, टंगस्टन आदि।

अलौह धातु में लोहा के अंश बहुत कम होते हैं, जैसे - सोना, चाँदी, बॉक्साइट, टिन, ताँबा आदि।

(ii) अधात्विक खनिज - ऐसे खनिजों में धातु नहीं होते हैं, जैसे चूना पत्थर, डोलोमाइट, अभ्रक, जिप्सम आदि। जीवाश्म की उपस्थिति के आधार पर अधात्विक खनिज को भी दो भागों में बाँटा जाता है

(क) कार्बनिक खनिज - ऐसे खनिजों का निर्माण भू-गर्भ में प्राणी एवं पेड़-पौधों के दबने से होता है। जैसे कोयला, पेट्रोलियम आदि।

(ख) अकार्बनिक खनिज - ऐसे खनिज में जीवाश्म की मात्रा नहीं होती है, जैसे - अभ्रक, ग्रेफाइट आदि।

## 7. शक्ति संसाधनों के संरक्षण की दिशा में उठाये गये प्रयासों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- शक्ति संसाधन के संरक्षण के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं

(i) ऊर्जा के उपयोग में मितव्ययिता - ऊर्जा का उचित एवं आदर्शतम उपयोग होने से ऊर्जा का दुरुपयोग नहीं होता है।

(ii) ऊर्जा के नवीन क्षेत्रों की खोज - ऊर्जा संकट का समाधान नवीन ऊर्जा स्रोतों में निहित होते हैं। इसके लिए सुदूर संवेदी प्रणाली का भी प्रयोग हो रहा है।

(iii) ऊर्जा के नवीन वैकल्पिक साधनों का उपयोग - जो संसाधन समाप्त होने वाले हैं जिनकी पुनरावृत्ति संभव नहीं है, उस संसाधन को संरक्षित करना चाहिए। बदले में ऐसे स्रोत जो न समाप्त होने वाले हैं, ऐसे वैकल्पिक साधनों का प्रयोग किया जाए जैसे जल विद्युत, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जैव ऊर्जा, सौर ऊर्जा आदि। ये सभी नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोत भी कहे जाते हैं।

## 8. भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर :- भारतीय कृषि की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

(1) जीवन निर्वाह कृषि भारतीय कृषि आजीविका प्रधान तथा प्राचीन एवं परंपरागत व्यवसाय है। भारत की 70% आबादी कृषि पर आधारित है इस प्रकार कृषि पर जनसंख्या का बोझ अधिक है।

(ii) खाद्यान्नों की प्रधानता - अधिक जनसंख्या के लिए भोजन जुटाने हेतु फसलें कम पैदा की जाती हैं। खाद्यान्नों का ही मुख्य रूप से उत्पादन करना पड़ता है। व्यापारिक कम पैदा की जाती है।

(iii) कृषि के प्राचीन तरीके पिछड़ी विधि से किया जाता है।

(iv) कृषि का मानसून पर निर्भरता भारतीय कृषि पूर्णतः मानसूनी जलवायु पर निर्भर है। मानसून की अनिश्चितता का प्रभाव कृषि उत्पाद पर पड़ता है।

(v) व्यापारिक कृषि - इस प्रकार की कृषि में अधिक पूँजी आधुनिक तकनीक का निवेश किया जाता है। अतः किसान अपनी लगाई पूँजी से अधिक लाभ प्राप्त करने का प्रयास करता है।

जैसे - चाय, कॉफी

## 9. गेहूँ उत्पादन हेतु मुख्य भौगोलिक दशाओं का उल्लेख करते हुए भारत के गेहूँ क्षेत्रों के नाम लिखें।

उत्तर :- गेहूँ भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण खाद्य फसल है। भारत विश्व का दशाएँ इस प्रकार से है दूसरा सबसे बड़ा गेहूँ उत्पादक देश है।

इसके उत्पादन हेतु मुख्य भौगोलिक दशाएँ इस प्रकार से है -

(1) तापमान - बोते समय 10-15 °C

पकते समय 20-25 °C

(ii) वर्षा - 50-100 सेमी.

(iii) मृदा - जलोद, हल्की दोमट

गेहूँ एक रबी फसल है जो मुख्यतः निम्न क्षेत्रों में उपजाया जाता है।

जैसे - उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और बिहार गेहूँ के प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। उत्तरप्रदेश भारत का सबसे बड़ा गेहूँ उत्पादक राज्य है।

## 10. भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विवरण दीजिए।

उत्तर - 6. भारत में वैश्वीकरण की आवश्यकता आज के संदर्भ में अति आवश्यक है। विकास की जो स्थिति है उसके लिए उद्योग एवं व्यापार को नई प्रौद्योगिकी और ज्ञान की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में देश में आधुनिक तकनीकी ज्ञान एवं पूँजी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए तथा विश्व बाजार में पूँजी और उत्पादित वस्तुओं को भेजने में वैश्वीकरण का महत्व काफी बढ़ गया है। भारत के लिए वैश्वीकरण कई कारणों से आवश्यक है।

(i) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन - वैश्वीकरण के द्वारा विदेशी निवेश को प्रोत्साहन मिलता है। भारत जैसे विकासशील देश अपने विकास के लिए पूँजी प्राप्त कर सकेगा।

(ii) मानवीय पूँजी की क्षमता का विकास - वैश्वीकरण के लिए दो मुख्य घटकों का होना अनिवार्य होता है - शिक्षा तथा कौशल। इन दोनों घटकों के द्वारा ही मानवीय विकास को बढ़ावा मिलता है।

(iii) प्रतियोगिता - वैश्वीकरण के संसाधनों के आवंटन में कुशलता आएगी। 'पूँजी निपज अनुपात' घटेगा तथा श्रम की उत्पादकता में वृद्धि होगी। इससे देश में विदेशी पूँजी एवं आधुनिक तकनीक प्रवाहित हो सकेगी।

(iv) अच्छी उपभोक्ता वस्तुओं की प्राप्ति-भारत में वैश्वीकरण की आवश्यकता भारत जैसे विकासशील देशों को अच्छी गुणवत्ता वाली उपभोग की वस्तुओं की तुलना में कम कीमत पर प्राप्त करने के योग्य बनाता है।

(v) नये बाजार तक पहुँच-भारत जैसे विकासशील देश के लिए विश्व के बाजारों तक पहुँचने का एक आम रास्ता वैश्वीकरण ही है।

(vii) बैंकिंग तथा वित्तीय क्षेत्रों में सुधार देश में विदेशी बैंकों के आगमन से देश की बैंकिंग व वित्तीय व्यवस्था में सुधार होगा।

### 11. भारत के सीमेंट उद्योग का वर्णन करें ।

उत्तर :-आवास निर्माण एवं देश के ढाँचागत क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। सीमेंट उद्योग के लिए चूना पत्थर, कोयला, सिलिका, एल्युमिनियम और जिप्सम की आवश्यकता होती है। भारत में 1904 में तमिलनाडु के मद्रास में प्रथम सीमेंट उद्योग लगाया गया। इस उद्योग का विकास स्वतंत्रता के बाद ही हुआ। सीमेंट उद्योग के स्थानीयकरण के कारण कच्चे माल, शक्ति के साधन, पूँजी तथा परिवहन के साधन का होना जरूरी है। सीमेंट उद्योग के कारखाने देश के कई राज्या, यथा - मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश आदि में वितरित है। कटनी, सतना, जामनगर, जबलपुर, चुनार, डालमियानगर, कल्याणपुर, सिंदरी, बंजारो आदि सीमेंट उत्पादन के महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। भारत में उत्पादित सीमेंट का निर्यात इंडोनेशिया, मलेशिया, देशामध्यपूर्व तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों N किया जाता है। 2014-15 में 2,052 लाखन का उत्पादन भारत में हुआ था।

### 12. प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों का वर्णन कीजिए ।

उत्तर :- प्रदूषण के विभिन्न प्रकार हैं, यथा जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, मिट्टी प्रदूषण इत्यादि। इन्हें रोकने के उपाय अलग-अलग हैं।

जल प्रदूषण - नदियों, तालाबों और झीलों में गर्म जल तथा अवशिष्ट पदार्थों गिराने से पहले उसे शोधित किया जाए। जलाशयों में मल - मूत्र बहाने तथा पशुओं को धोने से बचना चाहिए।

वायु प्रदूषण - कोयले के स्थान पर तेल का उपयोग कर धुआँ रोका जा सकता है। पृथक्कारी छत्रा बैगफिल्टर तथा स्क्रबर मंत्र का इस्तेमाल तथा वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कारखानों में ऊँची चिमनियाँ लगाई जाए।

ध्वनि प्रदूषण - पटाखों पर प्रतिबंध लगाकर को कम किया जा लाउडस्पीकर पर रोक, कारखानों एवं मोटरगादियों में माइलेंसर ध्वनि प्रदूषण सकता है। का उपयोग करने की आवश्यकता है।

मिट्टी प्रदूषण - मिट्टी प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए वन रोपण और चारागाह का उचित प्रबंध करना चाहिए।

### 13. लोहा एवं इस्पात उद्योग को बुनियादी उद्योग क्यों कहा जाता है?

उत्तर :- लोहा-इस्पात उद्योग आधारभूत उद्योग है। खनिज पर आधारित उद्योगों में यह सबसे महत्वपूर्ण है। इनसे विभिन्न कल-कारखानों के लिए मशीन तथा संयंत्र कृषि के उपकरण तथा परिवहन के साधन बनाए जाते हैं। इनके द्वारा उत्पादित उपस्कर किसी अन्य धातु द्वारा निर्मित होने पर भी इस प्रकार की उपयोगिता नहीं प्रदान कर सकते हैं। यह उद्योग आधुनिक सभ्यता की रीढ़ है। अतः लोहा एवं इस्पात उद्योग को उसकी मौलिकता तथा उसका कोई विकल्प नहीं होने के कारण बुनियादी उद्योग कहा जाता है।

### 14. भारतीय रेल परिवहन की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ?

उत्तर :- ( I ) देश के विभिन्न महानगरों में मेट्रो रेल चालू हो गई है।

( II ) कई तीव्रगामी रेल सेवाएँ जैसे राजधानी एक्सप्रेस, गतिमान एक्सप्रेस, शताब्दी एक्सप्रेस, जनशताब्दी एक्सप्रेस, दूरंतो एक्सप्रेस आरंभ की जा चुकी है।

( iii ) भारत में अनेक लंबी दूरी की गाड़ियाँ प्रारंभ की गई है। जम्मूतवी से कन्याकुमारी तक चलने वाली हिमसागर एक्सप्रेस एवं गुवाहाटी से कन्याकुमारी तक विवेक एक्सप्रेस सबसे लम्बी दूरी की गाड़ी है।

( iv ) महानगरों तथा बड़े शहरों में दैनिक यात्रियों के आवागमन के लिए DMU, EMU और MEMU रेलगाड़ी चलाई जा रही है।

( v ) माल बुलाई के लिए मालगाड़ियों में प्राइवेट कंटेनर एवं वैगन लगायी जा रही हैं।

( vi ) रेल दुर्घटना को रोकने के लिए स्वनियंत्रणयुक्त रक्षा कवच ( ACD ) की व्यवस्था की गयी है।

( vii ) 1 अगस्त, 1947 से रेल मंत्रालय द्वारा रेल यात्री बीमा योजना कार्य कर रही है।

( viii ) अधिकांश स्टेशनों पर कम्प्यूटरीकृत आरक्षण का प्रावधान है।

( ix ) भारतीय रेल की सबसे अनोखी विशेषता ' जीवनरेखा ' का चलाया जाना है। यह रेलगाड़ी विश्व का पहला चलंत अस्पताल है।

### 15. भारत के लिए जलमार्ग का क्या महत्व है ?

उत्तर :- भारत के लिए जलमार्ग का महत्व भारत में प्राचीनकाल से ही जलमार्ग का विशेष महत्व है।

( i ) यह राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य साधन है।

( ii ) इसमें रख - रखाव का खर्च नहीं होता है।

( iii ) अधिक भारी सामानों का परिवहन जलमार्ग द्वारा ही किया जाता है।

( iv ) समुद्री धाराओं और नदियों के प्रवाह की दिशा में ईंधन कम लगने से परिवहन खर्च कम आता है।

(v) इसके लिए विशेष मार्ग की आवश्यकता नहीं होती।

### 16. " कृषि बिहार की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। " इस कथन को व्याख्या कीजिए।

उत्तर :- बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है। यहाँ की 80 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है। बिहार की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है। बिहार में गंगा का उत्तरी मैदान सबसे उपजाऊ जमीन है। राज्य में खाद्यान्न फसलों चावल, गेहूँ, मक्का, जौ, दलहन एवं तेलहन हैं। इसके अलावे रेशेदार फसलों जैसे — पटसन, जूट, नकदी फसलों — जैसे — गन्ना, तम्बाकू, पान तथा फल और सब्जियों का प्रचुर उत्पादन होता है। फलों में आम, केला, लीची, अमरूद प्रमुख है। इन कृषि फसलों के उत्पादन व व्यापार से कृषकों एवं व्यापारियों को लाभ तथा सरकार को राजस्व की प्राप्ति हो रही है। कृषि के साथ पशुपालन भी किया जा रहा है। इससे लोगों की आजीविका व राज्य सरकार को आय की प्राप्ति हो रही है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के अन्तर्गत चाय - प्रसंस्करण उद्योग, दुग्ध उद्योग, मखाना, शहद, बिस्कुट, बेकरी, मत्स्य, शीतल पेय उद्योग का विकास हुआ है। अतः कृषि एवं आनुषंगिक कार्य बिहार की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

### 17. बिहार में वन सम्पदा की वर्तमान स्थिति का वर्णन करो ?

उत्तर :- विभाजन के बाद बिहार वन - सम्पदा में निर्धन हो गया। बिहार में कुल क्षेत्रफल के लगभग 7% पर वनों का विस्तार है। इस प्रदेश के अधिकांश वन दक्षिणी पठारी भागों एवं उत्तरी - पश्चिमी उप हिमालय क्षेत्र में फैले हुए हैं। यहाँ मानसूनी प्रकार के पर्णपाती वन मिलते हैं। वन में पाए जाने वाले मुख्य वृक्ष हैं — आम, खैर, नीम, साल, पीपल, शीशम, महुआ, कटहल, पलास, बरगद, बाँस, गम्हार, जामुन, केंदु आदि। राज्य में वनों का वितरण विषम है। पश्चिम चम्पारण, गया, मुंगेर, बांका, जमुई तथा कैमूर जिलों में वन की सघनता अधिक है। दूसरी ओर दरभंगा, सारण भोजपुर, पटना, बक्सर, वैशाली, नालंदा आदि जिलों में वनों का विस्तार कम है।

### 18. बिहार की कृषि समस्याओं पर विस्तार से चर्चा करें।

उत्तर :- बिहार की कृषि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण समस्याएँ निम्नलिखित हैं -

(1) प्राकृतिक आपदा - बिहार की कृषि बाढ़ और सूखा की समस्या से हमेशा ग्रसित रहती है। इससे जान - माल के साथ - साथ फसलों को भी नुकसान होता है। बिहार का 64 लाख हेक्टेयर बाढ़ ग्रस्त है।

(ii) जल जमाव - उत्तरी और दक्षिणी बिहार के मैदानी भागों में क्रमशः चौर और टाल क्षेत्र में तीन से चार महीने जल जमाव रहते हैं। इससे खरीफ और रबी फसल प्रभावित होती है। 9.41 लाख हेक्टेयर भूमि जल जमाव से ग्रसित है।

(iii) बंजर भूमि - बिहार की लगभग 7 प्रतिशत भूमि इस वर्ग में सम्मिलित है। इनमें 5.33 प्रतिशत चाल परती, 1.42 प्रतिशत अन्य परती और 0.49 प्रतिशत कृषि योग्य बंजर भूमि है।

(iv) मिट्टी - अपरदन - बिहार का मैदानी भाग सतही अपरदन और पठारी एवं पर्वतीय भाग अवनालिका अपरदन से प्रभावित है। मैदानी क्षेत्र में मिट्टी के उपजाऊ तत्त्व बहकर अन्यत्र चले जाते हैं जिसे रेंगती हुई मौत (Creeping death) कहते हैं।

(v) मिट्टी का अत्यधिक उपयोग - बिहार के मैदान की मिट्टी हजारों वर्ष से लगातार फसल के अन्तर्गत है। इससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हुई है। एक ही खेत वर्ष में कई फसलें, पैदा की जाती हैं। इससे मिट्टी के विशेष उपजाऊ तत्त्व नष्ट हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त कृषि सम्बन्धी आर्थिक समस्याएँ भी हैं।